|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| I. | Jesus von Nazareth kontrovers / 978-3-8258-0599-9  ZUR EINFÜHRUNG |  |
|  | | |
|  | Erste Hinführung zum neuen Buch von Joseph Ratzinger/ |  |
|  | Benedikt XVI. | 3 |
|  | Karl KardinalLEHMANN |  |
|  | | |
|  | Der Papst auf der Agora | 9 |
|  | Christoph Kardinal SCHÖNBORN |  |
|  | | |
|  | Ins Leere | 19 |
|  | Adolf HOLL |  |
|  | | |
| II. | THEOLOGISCHE RÜCKFRAGEN |  |
|  | | |
|  | Kant sowie ältere protestantische Systematik | 27 |
|  | KlausBERGER |  |
|  | | |
|  | Der Papst schreibt ein theologisches Buch | 41 |
|  | Karl-HeinzOHLIG |  |
|  | | |
|  | Der Jesus des Papstes | 49 |
|  | AlbertFRANZ |  |
|  | | |
|  | Wahrer Mensch vom wahren Gott | 65 |
|  | PaulWESS |  |
|  | | |
|  | Spiritualität und kritische Reflexion | 85 |
|  | MichaelPLATTIG |  |
|  | | |
|  | Den Grund des Glaubens zur Sprache bringen | 97 |
|  | ManfredGERWING |  |
|  |  |  |
|  | Jesus - logischer gemacht? | 109 |
|  | Hermann HÄRING |  |
|  |  |  |
|  | Das eine Licht und die vielen Lichter | 121 |
|  | Hans KÜNG |  |
|  |  |  |
| III. | JENSEITS DER THEOLOGIE |  |
|  |  |  |
|  | Josef Ratzingers Jesusdeutung | 129 |
|  | HansALBERT |  |
|  |  |  |
|  | Der Gott des Papstes | 143 |
|  | Horst JürgenHELLE |  |
|  |  |  |
|  | Rede des auferstandenen Jesus vom Weltgebäude herab, dass Alles ganz Anders sei | 151 |
|  | Aus dem Hebräischen und Aramäischen übersetzt von Ernst AxelKNAUF |  |